



Hargharpanditji

॥ श्री जया एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री जया एकादशी व्रत कथा ॥

माघ मास के शुक्ल पक्ष की जया एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का माहात्म्य पद्म पुराण और भविष्योत्तर पुराण में वर्णित है। यह व्रत भूत, प्रेत, पिशाच आदि योनियों से मुक्ति देने वाला तथा समस्त पापों का नाश करने वाला माना गया है।

श्री जया एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! यह एकादशी 'जया एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करता है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन समय में देवराज इन्द्र स्वर्गलोक में नन्दनवन में एक विशाल उत्सव का आयोजन कर रहे थे। उस उत्सव में देवता, गंधर्व, किन्नर और अप्सराएँ भगवान के गुणों का गान और नृत्य कर रहे थे।

उसी सभा में माल्यवान नामक गंधर्व और पुष्पवती नाम की अप्सरा भी उपस्थित थे। दोनों एक-दूसरे के रूप और प्रेम में इतने मोहित हो गए कि उनका ध्यान संगीत और नृत्य से हट गया। परिणामस्वरूप उनका प्रदर्शन बिगड़ गया।

देवराज इन्द्र ने इसे अपना अपमान समझा और क्रोधित होकर दोनों को शाप दिया—

"तुम दोनों अपने कर्तव्य से विमुख हुए हो। अतः स्वर्ग से गिरकर मृत्युलोक में पिशाच योनि को प्राप्त हो जाओ।"

इन्द्र के शाप से माल्यवान और पुष्पवती उसी क्षण पिशाच बनकर हिमालय के घने जंगलों में रहने लगे। वे अत्यंत दुःख और कष्ट भोगने लगे। न भोजन का सुख था, न विश्राम, न ही किसी प्रकार का आनंद। एक दिन संयोगवश माघ शुक्ल पक्ष की एकादशी आ गई। उस दिन उन्हें भोजन नहीं मिला। वे पूरे दिन और पूरी रात भूखे-प्यासे रहे। ठंड के कारण वे एक वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे भगवान का स्मरण करते रहे। इस प्रकार उनसे अनजाने में जया एकादशी का व्रत और रात्रि-जागरण हो गया। द्वादशी के दिन व्रत के पुण्य-प्रभाव से उनका पिशाच रूप समाप्त हो गया और वे पुनः अपने दिव्य गंधर्व एवं अप्सरा स्वरूप को प्राप्त कर स्वर्गलोक लौट गए।

जब देवराज इन्द्र ने उन्हें पुनः दिव्य रूप में देखा तो आश्चर्यचकित होकर पूछा—

"तुम दोनों को इस शाप से मुक्ति कैसे मिली?"

माल्यवान ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—

"हे देवराज! भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा और जया एकादशी के व्रत के प्रभाव से हमें पिशाच योनि से मुक्ति प्राप्त हुई है।"

यह सुनकर इन्द्र अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले—

"जो भगवान विष्णु का भक्त है और जया एकादशी का व्रत करता है, वह वास्तव में धन्य है।"

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक जया एकादशी का व्रत करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर भूत, प्रेत और पिशाच जैसी अधम योनियों से बचता है तथा अंत में मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

जया एकादशी का महत्व

यह एकादशी विशेष रूप से पिशाच, प्रेत और नकारात्मक कर्मों से

भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा, विष्णु सहस्रनाम का पाठ, गीता-पाठ और रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।

इस दिन दान, जप, भजन और सत्संग करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है।

कथा का संदेश

कर्तव्य का पालन करना अत्यंत आवश्यक है।

मोह और असावधानी से पतन हो सकता है, परंतु सच्ची भक्ति और भगवान की कृपा से उद्धार संभव है।

एकादशी व्रत आत्मसंयम, भक्ति और पापों से मुक्ति का श्रेष्ठ साधन है। भगवान श्रीहरि विष्णु अपने भक्तों का सदैव कल्याण करते हैं।

जया एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु माघ शुक्ल पक्ष की जया एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे भय, नकारात्मकता और अधर्म से मुक्ति मिलती है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री जया एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥